स्व-उन्नति के लिये

अनमोल

महावाक्य

1995-96

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू
राजस्थान

प्रकाशक:
साहित्य विभाग
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू
राजस्थान

मुद्रक :
ओम् शान्ति प्रैस,
ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन,
आबू रोड - 307026 (राजस्थान)

प्रस्तावना

सन् 1994-95 में बापदादा ने अपनी अव्यक्त वाणियों में हमारी उन्नति के लिये बहुत ही गहरी, गम्भीर, गुह्य राज़ों से युक्त, अनमोल एवं कल्याणकारी युक्तियाँ दी हैं उनका हम जितना अध्ययन करें कम है। उन्हें धारण करने का पूरा पुरुषार्थ करने की जरूरत है। यों तो उन्हें प्रारम्भ से ले कर अन्त तक पूरा पढ़ने में अद्भुत रस आता है और अथाह शक्ति मिलती है परन्तु फिर भी पुरुषार्थ को सहज करने के लक्ष्य से उनमें से कुछेक रत्न इन पृष्ठों में संजो दिये गये हैं ताकि अत्यधिक

व्यस्त रहने वाले बहन-भाइयों को इन्हें दोहराना सहज हो जाए। यद्यपि ये पर्याप्त नहीं हैं तो भी कुछ तो सहायक हैं ही इसलिये हर एक अव्यक्त वाणी में से कुछ-कुछ महावाक्य हम यहाँ दे रहे हैं। जिन पर ध्यान देते हुए पुरुषार्थ करने से हमारी स्व-उन्नति निश्चित रूप से होगी।

ओम् शान्ति

स्व-उन्नति के लिये अनमोल महावाक्य

डायमण्ड स्थिति द्वारा डायमण्ड जुबली **(1996)** मनाने की तैयारियाँ

1. श्रेष्ठ संकल्पों का खाता जमा करना है। वेस्ट को बचाकर बेस्ट करना है। मन्सा शक्ति को कार्य में लगाना है। जिससे चमकते हुए डायमण्ड्स का दृश्य विश्व में दिखाई दे।

2. हिम्मत रखकर, मदद के पात्र बन सफलता के जन्म सिद्ध अधिकार का अनुभव करना है। सदा यह स्लोगन स्मृति में रहे कि ''सफल करना है, सफलता पानी है।''

3. हर संकल्प में दिव्यता की शक्ति या विशेषता को अपनाकर अवतार रूप में प्रत्यक्ष होना है।

4. स्नेह की निशानी सहयोग है। लेकिन स्नेह और सहयोग के साथ शक्ति रूप भी चाहिये। क्योंकि विघ्न-विनाशक बनने का साधन है ही शक्ति स्वरूप। जैसे सेवाधारी बहुत अच्छे हो ऐसे विघ्न विनाशक स्वरूप की स्थिति भी बनाओ।

5. प्रत्यक्षता का सूर्य विश्व में प्रत्यक्ष हो इसके लिए पवित्रता की शमा चारों ओर सदा श्रेष्ठ से श्रेष्ठ जलती रहे, ज़रा भी हलचल में नहीं आये। पवित्रता की शमा जितनी अचल होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे और पवित्रता की जयजयकार होगी।

6. सत्यता की शक्ति का झण्डा लहराना है, बाप सत्य है, ज्ञान सत्य है, आत्मा भी सत्य है और ब्राह्मण जीवन भी सत्य है। यह सत्यता का झण्डा पहले लहराना है तब इस सत्यता की विशेषता से सच्चे डायमण्ड की चमक बढ़ेगी और भारत तो क्या, विश्व तक फैलेगी।

7. अपने दिव्य फीचर्स, मुस्कराते हुए फीचर्स, अचल-अडोल स्थिति के फीचर्स द्वारा सेवा करनी है। फीचर्स से सेवा करना अर्थात् प्रैक्टिकल लाइफ में बल देना। क्योंकि फीचर्स बोलते हैं, छिप नहीं सकते।

8. डायमण्ड जुबली मनाने का अर्थ सिर्फ ये नहीं है कि प्रोग्राम कर लिये। लेकिन डायमण्ड बन

डायमण्ड बनने का मैसेज देना है। अपने प्रत्यक्ष प्रमाण से सेवा करना–ये है डायमण्ड जुबली मनाना।

9. सुनने और कहने के साथ-साथ अब अनुभव की अथॉरिटी बनना है। सबसे बड़ी अथॉरिटी अनुभव है। हर गुण, हर शक्ति, हर ज्ञान की प्वाइन्ट को अनुभव में लाना है।

10. सदा कर्म में बिज़ी रहना, कर्म से योग लगाना–यह अलबेलापन है। इसलिए कर्म करते योग का अनुभव करना है। अभ्यास पर अटेन्शन देना है।

11. पूर्वज स्वरूप से विश्व की सर्व आत्माओं को रहम की भावना से देखते, वरदानी बन, शुभ

भावना और शुभ कामना का दान देना है। शुभ भावना और शुभ कामना का स्टॉक फुल हो। व्यर्थ को फुलस्टॉप दे दो।

12. बालक और मालिक बनकर देश-विदेश मिलकर सेवा का ऐसा प्लैन बनाओ जो विश्व में आवाज़ फैल जाए। ज्ञान सरोवर में ऐसा देश-विदेश का मिला-जुला कार्यक्रम हो जिसमें भिन्न-भिन्न स्टेट का एक जरूर आये। ऐसा प्रोग्राम हो जो विश्व में किसी भी स्थान पर न हुआ हो।

13. अब सेवा सम्पन्न करके समाप्त करना है। सेवा सम्पन्न तब होगी जब कम से कम 9 लाख की माला तैयार हो। सम्पूर्णता द्वारा समाप्ति के समय को समीप लाना है। कोई समय साधन

नहीं भी हों तो साधना में कोई विघ्न नहीं पड़ना चाहिए।

14. लगन की अग्नि को तेज करने के लिये बीच-बीच में विघ्न रूप में बाईप्लाट्स आते हैं। लेकिन इसमें भी भविष्य कल्याण भरा हुआ है। सिर्फ त्रिकालदर्शी स्थिति के आसन पर स्थित होकर देखो। भल वर्तमान हलचल का रूप हो लेकिन हलचल के पीछे कल्याण जरूर छिपा हुआ है क्योंकि बापदादा का वरदान है–जो हो रहा है वो अच्छा और जो होना है वह और ही बहुत-बहुत अच्छा। स्थापना निश्चित है तो विजय भी निश्चित है ही।

15. साधना बीज है, साधन उसका विस्तार हैं। साधना के बीज को विस्तार में छिपा नहीं दो। बीज को प्रत्यक्ष करो। यह साधन सेवा के प्रति हैं, आराम पसन्द बनाने के लिए नहीं। इसलिए अब डनलप का तकिया और बिस्तरा निकालकर अटेन्शन और उमंग-उत्साह वाला पुरूषार्थ करो।

16. बॉडी कॉन्सेसनेस के बहुत सूक्ष्म रूप बनते जाते हैं। अभी मोटे रूप में नहीं आता है लेकिन सूक्ष्म और रॉयल रूप में आता है। जैसे अपने विचार खुशी से देते हो ऐसे दूसरों के विचार भी खुशी से लो। दूसरे की राय, दूसरे की बात को भी इतना ही रिगार्ड दो जितना अपनी बात को रिगार्ड देते हो।

17. आपको किसी के विचार अगर ठीक नहीं भी लगते हैं तो भी उसके ईफेक्ट (Effect) में नहीं आओ। यदि किसी भी कारण से अवस्था नीचे-ऊपर हो जाती है तो ये सेवा, सेवा नहीं होती। एडजस्ट (Adjust) करना, दूसरे के विचारों को भी अपने विचारों के माफ़िक सोचना- समझना – यह है दूसरे के विचारों को रिगार्ड देना।

18. दुनिया में सभी नाम, मान, शान की प्राप्ति ही मुख्य चाहते हैं। यहाँ भी आप यही चाहते हो लेकिन हद का नहीं, बेहद का। अगर मानो कोई कारण से आपका नाम गुप्त है और आप समझते हो कि मेरा नाम होना चाहिये, यथार्थ है फिर भी अगर किसी आत्मा से हिसाब-किताब के कारण या उसके संस्कार के कारण आपका नाम नहीं

होता है। आप राइट हो, वो रांग है फिर भी उसका नाम होता है, आपका नहीं, तो विजय माला में आपका नाम निश्चित है। इसलिए इसकी परवाह नहीं करो। जितना आप हद के मान के पीछे दौड़ लगायेंगे तो ये हद की कोई भी चीज़ परछाई के समान है। ये परछाई माया की धूप में दिखाई देती है, लेकिन है कुछ भी नहीं।

19. रूहानी पर्सनालिटी को स्मृति स्वरूप में रखो। जो ऊंची पर्सनालिटी वाले होते हैं उसकी कहाँ भी, किसी में भी आंख नहीं जायेगी। ये ऐसा है, ये ऐसा है, ये ऐसा करता, ये ऐसे करती, मैं क्यों नहीं करूँ, मैं क्यों नहीं कर सकती/कर सकता हूँ.... दूसरे के प्राप्ति में आंख नहीं जायेगी। क्योंकि रूहानी पर्सनालिटी वाला सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न

है। स्वभाव में भी सम्पन्न, संस्कार में भी सम्पन्न और सम्बन्ध-सम्पर्क में भी सम्पन्न भरपूर, वो कभी अपने प्राप्तियों के भण्डार में कोई अप्राप्ति अनुभव ही नहीं करेगा। वो सदा ही मन से भरपूर होने के कारण सन्तुष्ट रहेगा।

20. मायाजीत बनने के लिए पवित्रता की पर्सनालिटी को सदा इमर्ज रूप में रखो। यदि इमर्ज रूप में स्मृति रहती है तो स्मृति ही समर्थी का आधार है और जहाँ समर्थी है तो समर्थ आत्मा के पास माया का आना असम्भव है। मेहनत करने की आवश्यकता ही नहीं है। माया आई और भगाया, यह भी नहीं। आपका काम है सदा मायाजीत रहना।

21. पवित्रता ही रूहानी पर्सनालिटी है। पवित्रता

की निशानी है–स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में–चाहे उठने में, चाहे बोलने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर ज़रा-सा अन्तर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं। व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। क्यों ? व्यर्थ चला तो समय भी गया, सन्तुष्टता भी गई। इससे आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज की डिग्री में फर्क पड़ जायेगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। तो अमृतवेले से अपने संकल्प, बोल, कर्म, सेवा–सबको महीन रूप से चेक करो कि विधिपूर्वक हैं ?

22. आपस में एक-दो के विचारों को रिस्पेक्ट दो–यह वैल्यु प्रैक्टिकल में एक-दो के प्रति रखते हुए प्लैन बनाने से डायमण्ड जुबली में एक-एक चमकते हुए डायमण्ड दिखाई देंगे

23. इकॉनॉमी का अवतार बनना है। व्यर्थ संकल्प, बोल, समय–सब ख़ज़ानों की इकॉनॉमी करनी है। कोई संकल्प कन्ट्रोल नहीं हो सकते हैं, तो उन्हें परिवर्तन करना है। बचत करके दिखाना है। जो कहते हो वह पहले करके दिखाना है। पहले करना है फिर कहना है।

24. एकान्तवासी बनना है अर्थात् एक बाप के अन्त में खो जाना है, ऊपर-ऊपर लहरों में लहराने के बजाए अन्त में खो जाना अर्थात् बाप से जो भी प्राप्तियाँ हैं, उसमें खो जाना है।

25. एक बाप दूसरा न कोई – इस स्थिति के द्वारा एकनामी बन अपने सर्व ख़ज़ानों को जमा करना है।

26. दृढ़ता की विशेषता को हर संकल्प, हर कर्म में लाना है। साधारण संकल्प नहीं करने हैं, प्रतिज्ञा करनी है। शरीर जाए लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जाए। कितना भी सहन करना पड़े, परिवर्तन करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा नहीं तोड़नी है।

27. संकल्पों के एकाग्रता की विशेषता द्वारा श्रेष्ठ परिवर्तन में फास्ट गति लानी है। जितना बाहर का टेन्शन हो उतना एकाग्र और टेन्शन फ्री रहना है। भिन्न-भिन्न पोज़ नहीं बदलने हैं।

28. कोई भी ग़लती हो जाती है तो सोचने के बजाए स्मृति स्वरूप बनना है। बात पूरी हुई, पेपर पूरा हुआ फिर सोच-सोच कर टाइम नहीं गँवाना है। सेकण्ड में निर्विकल्प स्थिति बनाने का संस्कार इमर्ज करना है।

29. व्यर्थ संकल्पों के तेज बहाव में बहने के बजाए परिवर्तन शक्ति द्वारा देह भान को आत्म भान में परिवर्तन कर दो। सेकण्ड में परिवर्तन करने से समय, संकल्प सब बच जायेंगे। वेस्ट बेस्ट में जमा हो जायेगा।

30. निर्मल और निर्माण बनना – यही रीयल गोल्ड की निशानी है। इसमें मेरापन अलाए है। इसलिए निर्मल स्वभाव धारण करना है। कोई बात जोश दिलाने वाली हो लेकिन आप अपने निर्मल (शीतल) स्वरूप में रह उसे परिवर्तन कर दो तो नम्बर वन में आ जायेंगे।

31. व्यर्थ देखने, सुनने, वर्णन करने और सोचने की नेचर जो नेचुरल हो गई है अब इस नेचर को परिवर्तन करो।

32. वर्तमान समय वायुमण्डल में बेहद का वैराग्य प्रत्यक्ष रूप में होना चाहिए। यही समय की समीपता का फाउण्डेशन है। यथार्थ वैराग्य वृत्ति का अर्थ है–सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए जितना न्यारा उतना प्यारा, निमित्त और निर्मान भाव। सेवा करते चेक करो कि निमित्त भाव है या लगाव का भाव है? बाबा-बाबा के बदले मेरा-मेरा तो नहीं आता है?

33. जैसे सेवा का वायुमण्डल बनाते हो, ऐसे अब बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ। बेहद के वैराग्य की लहर दिल में उत्पन्न हो, सिर्फ दिमाग तक नहीं।

34. दूसरों को रिमार्क देने के बजाए स्वयं का

जज बनना है, वकील नहीं। ऐसे नहीं, मैं जो कहता/कहती हूँ, वही राइट है, ये ऐसे हैं, ये वैसे हैं.... वकीलों की तरह झूठ को सच, सच को झूठ सिद्ध नहीं करो, आपका स्लोगन है–''स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन''। तो पहले स्वयं को बदलना है।

35. चेक करो – हर घण्टे में जो भी बोल बोले, हर बोल में आत्मिक भाव और शुभ भावना रही ? ईर्ष्या-हषद, घृणा की भावना तो नहीं रही ? समर्थ बोल का अर्थ है–उस बोल से किसी भी आत्मा को प्राप्ति का अनुभव हो। हर बोल में प्राप्ति का भाव वा सार हो। यदि बोल में कोई सार नहीं है तो कमाने के बजाए गँवाया।

36. समय, प्रकृति और माया विदाई लेने के लिए इन्तज़ार कर रही है। आप सम्पूर्णता की

बधाइयाँ मनाओ तो वो विदाई लेकर जाये। एवररेडी बनो। नॉलेज के आइने में अपनी तकदीर की तस्वीर देखो और सम्पूर्णता की डेट फिक्स करो।

37. आत्माओं को योग्य वा योगी बनाने के लिए, धरनी तैयार करने के लिए वाणी के साथ वृत्ति से वायुमण्डल बनाओ। लाइट-माइट हाउस बन ऐसी लाइट फैलाओ जो सबको दिखाई दे–मैं आत्मा हूँ और बाप मेरा है।

38. ज्ञानी-योगी तु आत्मा के आगे सूक्ष्म देह अभिमान ही रुकावट है। अभिमान का दरवाजा 'मैं' और 'मेरापन' है। अभिमान को मिटाने की विधि है–करन-करावनहार की स्मृति। तो चेक करना है कि–बुद्धि का अभिमान, अपने श्रेष्ठ

संस्कार का अभिमान, अपने अच्छे स्वभाव का अभिमान, अपनी विशेषताओं का, अपनी कला का अभिमान, अपने सेवा की सफलता का अभिमान तो नहीं है ?

39. अब कड़ुवेपन को सदाकाल के लिए विदाई देनी है। एक लकीर भी कड़ुवेपन की न हो। मुखड़ा (फेस) भी मीठा हो।

40. माया के अंश को भी विदाई देकर स्वयं को वा दूसरों को फ़रिश्ते स्वरूप की बधाई देनी है। सदा फ़रिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहना है और दूसरों को भी फ़रिश्ते रूप में देखना है। जहाँ देखो वहाँ फ़रिश्ता ही फ़रिश्ता दिखाई दे। कोई फ़रिश्ता उड़ रहा है, कोई सन्देश दे रहा है, कोई नीचे धरनी

पर आकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कर रहा है। दृष्टि बदल जाए। जहाँ भी देखो फ़रिश्तों की दुनिया दिखाई दे।

41. यह दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि किसी की कमज़ोरी, कमी को न देखेंगे, न सुनेंगे, न ही बोलेंगे। किसी की अशुभ बात को अपने पास शुभ करके उठायेंगे। अशुभ देखते हुए भी शुभ दृष्टि से देखेंगे। 'कारण' शब्द को 'निवारण' में बदल देंगे।

42. किसी के प्रभाव में, किसी के संग में नहीं आना है। हम विश्व परिवर्तक हैं, हमें वायुमण्डल का संग भी बदल नहीं सकता।

43. किसी पर भी क्रोध करना, डिस्कस करना,

वार करना, किसी भी बात को सिद्ध करना–अब यह मिक्की माउस का खेल समाप्त कर शक्तिशाली बनना है।

44. जो भी सम्बन्ध में आये, सम्पर्क में आये, चाहे ब्राह्मण परिवार, चाहे और आत्मायें हों लेकिन जो भी जब भी आये हर एक को मधुर बोल की, स्नेह के बोल की गिफ्ट देनी है। कोई न कोई गुण वा शक्ति की सौगात देनी है। कोई भी खाली हाथ न जाए।

45. आपको कोई स्नेह नहीं भी दे, आप स्नेह देना, स्नेह लेना। आप पर कोई क्रोध करे तो भी उसे स्नेह के रूप में लेना है। हे विश्व परिवर्तक! किसी के नेगेटिव को भी पॉजिटिव में परिवर्तन कर दो।

46. 'मैं' और 'मेरा' – यही दो शब्द परेशान करते हैं। इसलिए जब 'मैं' शब्द बोलो तो अपने भिन्न-भिन्न टाइटल और प्राप्तियाँ याद करो। और जब 'मेरापन' शब्द यूज़ करो तो 'मेरा बाबा' पहले याद आये तो निरन्तर योगी बन जायेंगे।

47. जो भी नुकसान करने वाली बातें हैं, परेशान करती हैं उनके बजाए फ़ायदा देने वाली बातें याद करना। मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी ये चीजें, मेरा परिवार, मेरा सेन्टर, मेरा जिज्ञासु, मेरी सेवा इसने क्यों की ? इस हद के मेरेपन की भावना को बेहद में समाना। रोज़ वेरायटी अविनाशी प्राप्तियों को सामने रख, टाइटल की सीट पर सेट होकर बैठना है।

48. कैसी भी परिस्थिति हो, परिस्थिति चली जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। सदा खुश रहना और सबको दिलखुश मिठाई खिलाना। कोई आपको दु:ख देने की बात करे लेकिन हम सुख देंगे, सुख लेंगे–यह लक्ष्य रख नवीनता से, मौज-मौज से पुरूषार्थ करना।

49. माला में समीप आने के लिए दैवी परिवार से समीपता का सम्बन्ध रखना है, किनारा नहीं करना है। हर परिस्थिति में ब्राह्मण परिवार में निश्चयबुद्धि बनने से ही राज्य अधिकारी बन सकेंगे। निश्चयबुद्धि की विजय निश्चित है और हार असम्भव है।

50. स्वयं में, बाप में, ड्रामा में और दैवी परिवार में–निश्चयबुद्धि बन अचल स्थिति का अनुभव करना है। निश्चय की निशानी सदा निश्चिंत स्थिति में रहना है। बुद्धि में कभी क्यों, क्या, कैसे, ऐसे के व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति न हो क्योंकि यह व्यर्थ संकल्प की कमज़ोरी अन्त में यमदूत रूप में सामने आती है। दिलशिकस्त होने के संस्कार ही अन्त में सामना करते हैं।

51. कोई सोचे अन्त में मैं सिवाए बाप के और कुछ नहीं सोचूगाँ, लेकिन हो नहीं सकता। बहुत काल का अभ्यास चाहिए। अगर अन्त तक व्यर्थ संकल्प होंगे तो वही भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे।

52. जैसे क्रोध के स्वभाव वाला क्रोध करता, ऐसे आप स्नेह देने का स्वभाव बनाओ। सारी दुनिया आप पर क्रोध करे, झूठ बोले लेकिन मास्टर स्नेह के सागर उसकी परवाह नहीं कर सकते। आपके नयन-चयन, वृत्ति-दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव आ नहीं सकता। व्यर्थ बातों से बेपरवाह और समर्थ पर चलने वाले बनो। मर्यादाओं में बेपरवाह नही बनो।

53. सर्व के प्रति गुणग्राहक बनना है, रिगार्ड देना है, विशेषता देखनी है लेकिन फालो ब्रह्मा बाप को करना है। गाइड केवल एक गॉड है, ब्रह्मा साकार एक्जैम्पुल है, कोई भाई-बहन गाइड नहीं बन सकता।

54. बापदादा और बच्चों का वायदा है कि कहीं भी रहेंगे, कहीं भी हैं लेकिन सदा साथ हैं। ये ब्राह्मण जीवन आदि से अन्त तक बाप और बच्चों का अविनाशी साथ है। अलग हो नहीं सकते, असम्भव है। परमात्म वायदा कभी टल नहीं सकता। परमात्म वायदा भावी बन जाता है तो भावी टाले नहीं टले, इस वायदे को स्मृति में रख सदा साथ का अनुभव बढ़ाओ। यह साथ का अनुभव ही सदा सहज और सेफ रखता है।

55. अभी सोचना स्वरूप अधिक हो, स्मृति स्वरूप कम। मैं आत्मा हूँ–यह सोचते हो लेकिन स्मृति स्वरूप होकर चलना, बोलना, देखना इसमें अन्तर पड़ जाता है। अब इस अन्तर को मिटाओ।

56. ब्रह्मा बाप से प्यार है तो आचरण अर्थात् कर्म और उच्चारण ब्रह्मा बाप के समान हो। कदम पर कदम रखना अर्थात् फालो फादर करना। जैसे ब्रह्मा बाप ने आज्ञाकारी बनने का पहला कदम उठाया, ऐसे अमृतवेले से रात तक जो भी आज्ञायें मिली हुई हैं उसी आज्ञा प्रमाण चलकर बाप की और परिवार की दुआयें लेनी हैं। स्वयं भी डबल लाइट रहना है और सर्व को लाइट बनाना है।

57. जैसे त्याग में नम्बरवन एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप बनें ऐसे सर्वंश त्यागी बनना है। सर्वंश त्यागी अर्थात् देह के सम्बन्ध और देह के पुराने स्वभाव-संस्कार से भी त्यागी बनना है। क्योंकि त्याग का भाग्य समाप्त करने वाला–ये स्वभाव-संस्कार है। इसलिए बापदादा अण्डरलाइन करते हैं कि त्याग का भी त्याग करो। ''मैं त्यागी हूँ''–इस अभिमान

का भी त्याग।

58. अनेक प्रकार के कारण के और रोने के फाइल अब चेक करके समाप्त करने हैं। जोश भी रोना है, आवेशता में आना भी मन का रोना है। ये दोनों फाइल खत्म कर दो।

59. जहाँ कारण है वहाँ निवारण शक्ति नहीं है। इसलिए कारण को समाप्त कर निवारण स्वरूप बनो। कारण कहकर अपने को दुआओं से वंचित नहीं करो। साक्षीपन के सिंहासन पर बैठकर स्वयं का जज बनो और अपने आपका निर्णय करो। क्योंकि यथार्थ निर्णय का तख्त ये साक्षीपन की स्थिति है। साक्षी न होने से दूसरे की बात, दूसरे की चलन सामने ज्यादा आती है, अपनी नहीं आती है।

60. ड्रामा में जो भी बातें आती हैं उनमें इतनी अक्ल है, जो वो आती हैं और चली जाती हैं, लेकिन बच्चों में अक्ल कम है–बच्चे बातों को पकड़कर बैठ जाते हैं। कई कहते हैं–दो दिन से ये बात चल रही है, दो घण्टे से चल रही है–तो कितना गंवाया! इसलिए अक्ल वाले बनो, कारण को चेक करो और उसे समाप्त करो।

61. बाप, शिक्षक और सतगुरु के फ़रमानबरदार बन स्वयं को सर्व ख़ज़ानों से, ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, श्रेष्ठ समय का महत्व, श्रेष्ठ संकल्पों का ख़ज़ाना–ऐसे सर्व खजाने हर समय कार्य में लगाने हैं। एक श्वास, संकल्प, सेकण्ड व्यर्थ नहीं गँवाना है। बिना बाप के फ़रमान के एक संकल्प भी और कहाँ यूज़ न हो। जैसे ब्रह्मा बाप ने हर

फ़रमान को ''जी हाजिर'' किया, ऐसे फालो फादर करो। बाप का विशेष फ़रमान यही है कि याद और सेवा में सदा बाप-समान रहो।

62. वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपने सेवा वा सेवास्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अभी आराम की दिनचर्या हो गई है। अलबेलापन शरीर की छोटी-छोटी बीमारियों के भी बहाने बनाता है। पहले भी बीमारी तो होती थी लेकिन सेवा का उमंग बीमारी को मर्ज कर देता था। तो अब अलबेलेपन के बहाने छोड़ बेहद की वैराग्य वृत्ति जो मर्ज हो गई है, उसे इमर्ज करो।

63. जैसे ब्रह्मा बाप ने अन्त तक अपना जीवन बड़ी आयु होते हुए भी, तन का हिसाब चुक्तू करते

हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। साधनों को स्व के प्रति स्वीकार नहीं किया, ऐसे फालो फादर करो। इस वर्ष इसमें सेन्टर पर आने वाले स्टूडेन्ट और सेन्टर साथी सब नम्बरवन बनें तो बापदादा ऐसे सेवाकेन्द्र को विशेष प्राइज़ देंगे।

64. स्नेह का सबूत है – सम्पूर्ण फ़रिश्ता बनना। आप सबको चलते-फिरते सभी फ़रिश्ता ही देखें। बोल-चाल, रहन-सहन सब फ़रिश्तों का बन जाए। फ़रिश्ते का अर्थ है डबल लाइट। इसलिए दिनचर्या में लाइट नहीं बनना। ऐसे नहीं, जो आया वो किया, जैसे आया वो किया....। नहीं, दिनचर्या को टाइट करो और सम्बन्ध, सम्पर्क, स्थिति में लाइट बनो। एक-दो को कॉपी करने के बजाए बाप को कॉपी करो। ऐसा स्नेह का सबूत बापदादा को दो तब ही

माया और प्रकृति वाह विजयी वाह! की तालियाँ बजायेगी।

65. समय की सूचना बाप तो दे ही रहे हैं लेकिन प्रकृति भी दे रही है। प्रकृति भी चैलेन्ज कर रही है और आप लोग भी समय के प्रमाण औरों को सूचना देते रहते हो कि ''समय आ गया है''। तो यह चैलेन्ज स्वयं भी स्मृति में लाओ और समय के प्रमाण अपने पुरूषार्थ की गति को तेज करो।

66. नॉलेज के आईने में अपनी तस्वीर देखो और चेक करो कि अगर इस घड़ी महाविनाश हो जाए तो मैं क्या बनूँगा ? ब्रह्मा बाप आप साथियों के लिए रूके हुए हैं। क्योंकि बाप जानते हैं कि राजधानी चलनी है और राजधानी में एक ब्रह्मा

क्या करेगा! साथी भी चाहिए। इसलिए बाप बच्चों से प्रश्न करते हैं कि विनाश की डेट फिक्स की है? जैसे दूसरी डेट फिक्स करते हो ऐसे इस डेट फिक्स का भी प्रोग्राम बनाओ। यह डेट बाप को फिक्स नहीं करनी है। यह काम बाप ने आप बच्चों के हाथ में दिया है।

67. कभी भी मन से, बुद्धि से बाप के बेवफ़ा नहीं बनना। वफ़ादार का अर्थ है–सदा एक बाप दूसरा न कोई। संकल्प में भी देह, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ वा देहधारी व्यक्ति आकर्षित न करें। पदार्थ वा साधनों की आकर्षण भी साधना व वफ़ादारी को खण्डित कर देती है।

68. जरा भी किसी के प्रति विशेष झुकाव है,

पर्सनल झुकाव है, चाहे गुणों के ऊपर, चाहे सेवा के ऊपर, चाहे अच्छे संस्कार के ऊपर भी अगर एक्स्ट्रा प्रभावित हैं तो वफ़ादार नहीं कहा जायेगा। सबकी बेहद की विशेषता पर आकर्षित होना दूसरी बात है लेकिन किसी विशेष व्यक्ति या वैभव के ऊपर आकर्षित हैं तो वफ़ादार नहीं कहेंगे।

69. ब्राह्मण जीवन का सांस उमंग-उत्साह है, इसलिए किसी भी परिस्थिति में उमंग-उत्साह कम न हो। इसके लिए हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो। कोई भी बात नेगेटिव रूप में आये तो आप उसे पॉजिटिव में बदल दो। आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाए जो नेगेटिव बात को टच ही न करें। जब हाय-हाय का नज़ारा सामने आये तो वाह-वाह कर लो तो नज़ारा बदल

जायेगा।

70. माया अन्त तक बहुरूपी बन बहुरूप दिखायेगी। माया को बहुरूपी बनना बहुत जल्दी और अच्छा आता है। जैसी आपकी स्थिति होगी वैसी परिस्थिति बनकर आयेगी। इसलिए माया को देखने वा जानने के लिए त्रिकालदर्शी और त्रिनेत्री बनो।

71. कोई भी बड़े से बड़ी नाज़ुक परिस्थिति आगे के लिए बहुत बड़ा पाठ पढ़ाती है, वह पाठ पढ़ाने वाली टीचर है। इसलिए उसे देखकर घबराओ नहीं। कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे अच्छी हो, चाहे हिलाने वाली हो लेकिन हर समय, हर सरकमस्टांस के अन्दर अपने को एडजेस्ट कर लो। एडजेस्ट करने की पॉवर सदा विजयी बना

देगी।

72. दुनिया की हालतें नाज़ुक हो रही हैं और भी होंगी, होनी ही हैं। तो समय भल नाज़ुक हो लेकिन आपकी नेचर नाज़ुक नहीं हो। आपका फाइनल पेपर नाज़ुक समय पर होना है। तो जितना अभी से अपने को एडजेस्ट करने की शक्ति होगी उतना नाज़ुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। जिस समय कोई ऐसी परिस्थिति आ जाये तो अपने को स्टूडेन्ट बना कर खुद ही टीचर बन कर के अपने को पॉजिटिव थिंकिंग (Positive Thinking) का कोर्स कराओ।

73. किसी भी परिस्थिति को देखते हुए सदा वाह-वाह करो, व्हाई-व्हाई नहीं। अगर 'व्हाई' शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। व्हाई की जगह फ्लाय (Fly) कर लो

तो परिस्थिति छोटा-सा खिलौना हो जायेगी।

74. सदा यह याद रखो कि मैं ब्राह्मण आत्मा राज्य सत्ता और धर्म सत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ। यह स्मृति का निश्चय और नशा अविनाशी बना रहे क्योंकि निश्चय है तो नशा है, निश्चय कम है तो नशा भी कम है। इसलिए चेक करो–ये सत्ताएं सदा साथ रहती हैं वा कभी खो जाती हैं, कभी आ जाती हैं?

75. सारे दिन अपने अधिकार की सीट पर सेट (Set) रहो। कभी भी कोई छोटी-सी बात में अपसेट नहीं हो जाओ। ऐसे नहीं, कोई भी बात हो तो चेहरा बदल जाए, मूड बदल जाए। यह अपसेट होने की गिफ्ट दे दो। आज से कभी भी अपसेट नहीं होना। क्योंकि बापदादा को वो चेहरा अच्छा

नहीं लगता। बापदादा हर एक बच्चे को सदा खिला हुआ रूहानी गुलाब देखना चाहते हैं, मुरझाया हुआ नहीं। जिससे प्यार होता है, तो उसको जो अच्छा लगता है, वही किया जाता है। तो जब बाप से प्यार है तो अभी किसी का भी ऐसा समाचार न आए–''क्या करें, बात ही ऐसी थी, इसलिये अपसेट हो गए।'' नहीं।

76. जब भी कोई परिस्थिति या प्रकृति हलचल के रूप में आये तो दो शब्द याद रखना–नॉट और डॉट। अगर कोई बात रांग (Wrong) है तो यही सोचो कि नॉट (Not) माना नहीं करना है। न सोचना है, न करना है, न बोलना है। क्वेशन मार्क (?) आश्चर्य की मात्रा (!) या कॉमा (,) ये नहीं दो, फुल स्टाप (.) लगाओ।

77. किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है। लेकिन डायरेक्शन मिले–फुल-स्टॉप। तो सेकण्ड में फुल-स्टॉप लगा सकते हो? ऐसे एवररेडी बने हो? यह प्रैक्टिस बीच-बीच में एक सेकण्ड के लिये भी करते अभ्यास बढ़ाते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफ़िकेट एक सेकण्ड के फुल-स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। इस अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे।

78. हर एक बच्चे को बाप ने सर्व प्राप्तियों का वर्सा दिया है। जो सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा है वो सदा सन्तुष्ट रहती है। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित दिखाई देता है। उनके मन में कोई भी प्रश्न उठ नहीं सकता। वो सदा सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की झलक का वायब्रेशन फैलाते रहते

हैं। तो चेक करो–प्रसन्नचित हैं या अभी तक कोई प्रश्न हैं?

79. सम्बन्ध-सम्पर्क में आते, दूसरे की कमज़ोरी देखते-सुनते, वर्णन करते प्रभाव में आ जाते हो तब कहते हो कि ''इसने किया, इसलिये मेरे से भी हो गया।'' ''बाबा, आप समझो ना, इतना सहन कहाँ तक करेंगे! फिर भी पुरुषार्थी हैं ना, तो थोड़ा तो आयेगा ना'' ? ये व्यर्थ बातें चटपटी होती हैं। तो व्यर्थ बातें, व्यर्थ चिन्तन, सुनना, बोलना और करना–इसमें चलते-चलते इन्ट्रेस्ट (interest) बढ़ जाता है। ये व्यर्थ का संस्कार बुद्धि के निर्णय को खत्म कर देता है। इसलिये सबसे सहज सदा सन्तुष्ट रहने की विधि है–सदा अपने सामने कोई-न-कोई विशेष प्राप्ति को रखो।

80. हर धारणा में अलर्ट रहो, अलबेले नहीं बनो, क्योंकि समय समीप आ रहा है और समय समीप सूचना दे रहा है–समान बनो, सम्पन्न बनो। तो समय की चैलेन्ज को देखो। समय को नहीं गँवाओ। सबसे बड़े-ते-बड़ा मूल्य है समय का, क्योंकि इस समय का गायन है–''अब नहीं तो कब नहीं''। यदि चलते-फिरते रास्ते चलते दो बातें सुन ली, दो बातें कर ली–तो इसमें भी समय जाता है।

81. समाप्ति का समय नयों के लिये भी समीप है तो पुरानों के लिये भी समीप है। ऐसे नहीं समझना कि हमारे को भी 60 वर्ष शायद मिलने हैं। नहीं, आपको मेकप करना है। अगर लास्ट आये हो तो फास्ट जाना है। लेकिन सम्पन्न होने का, समाप्ति

का समय सबका एक ही है इसलिये चाहे नये हो या पुराने हो लेकिन मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ, मैं विश्व कल्याणकारी के ज़िम्मेदारी का ताजधारी हूँ...इसी स्मृति में सदा रहो। साधारण स्मृति न हो।

82. ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वा सम्बन्ध-सम्पर्क वाले। मैजारिटी 95% के दिलपसन्द जरूर बनना है। 5% की मार्जिन दे रहे हैं। यह मार्जिन अन्त तक के लिए नहीं है लेकिन अभी के लिए है। इसलिए 95% सबके दिल पसन्द अर्थात् सर्व से लाइट होकर रहो–यह सर्टीफिकेट लो।

83. प्रैक्टिस करो एक सेकण्ड में आत्मा शरीर से परे होने के लिये एवर-रेडी बन जाये। क्योंकि सबका वायदा है कि साथ चलेंगे, साथ रहेंगे। तो

चलने की भी तैयारी चाहिये ना। यदि कोई सूक्ष्म गोल्डन, सिल्वर, कॉपर की रस्सियाँ होंगी तो आप उड़ने की कोशिश करेंगे और रस्सी आपको नीचे ले आयेगी इसलिए चेक करो और अभ्यास करो कि सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हैं?

84. अभी इस वर्ष के सीजन का समय समाप्त हो रहा है। तो बापदादा को एक संकल्प है। ब्रह्मचर्य व्रत तो सभी ने बहुत सहज धारण किया है लेकिन अगले वर्ष सीजन में वही आये जो क्रोध नहीं करे। ये हो सकता है कि फेल हो जायेंगे? बोलेंगे तो सच ना। फॉर्म में सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत का नहीं लिखना लेकिन क्रोध कितने समय से नहीं किया? क्रोध पर कड़ी नज़र रखना। अन्तर्मुखता से मुख को बंद कर देना। मुख खुलेगा तब ही तो क्रोध होगा ना? तो इस सीजन में क्रोध-मुक्त आत्माओं का

मेला होगा। पसन्द है ना ?

सेवाओं के लिए – दिशा निर्देश

1. पंजाब, हरियाणा, हिमाचल वाले क्या करें ? अ.ये कितनी माला लायेंगे ? लाख, दो, तीन कितनी ? (4 लाख) पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर 4 तो हैं, तो चार एक-एक लाख बनायें तो क्या बड़ी बात है।

ब. पंजाब ऐसा संगठन लाये जो विश्व में नाम हो जाए। किससे नाम होगा ? जो बड़े से बड़े आतंकवादी हैं वो अन्तर्मुखी हो जायें। तो गवर्नमेन्ट ब्रह्माकुमारीज़ को इनाम देंगी। नामीग्रामी आतंकवादी जो प्रसिद्ध हो, जिसके लिये ईनाम मुकरर हो। मिनिस्टर तो आते ही रहते हैं। कोई नई बात करके

दिखाओ, देखो एक डाकू आया तो भी कितनी सर्विस हो गई। लेकिन उन्हों को डाकू से ब्राह्मण बना कर लाओ, ऐसे नहीं लाना। परिवर्तन करके लाओ।

2. गुजरात वाले क्या करें ?

गुजरात सैल्वेशन आर्मी है। सबको सैल्वेशन देने वाले।

गुजरात में वारिस क्वालिटी अच्छी निकल सकती है तो अभी गुजरात महावारिस का ग्रुप बनाओ। गुजरात महावारिस बनायेगा और नम्बरवन लेगा।

3. इस्टर्न (नेपाल, बंगाल बिहार, उड़ीसा, आसाम) वाले क्या करें ?

अ. नेपाल वाले बुलन्द आवाज़ करने वाले माइक

तैयार करो। सेवा में नया मोड़ लाओ। नवीनता लाओ। अभी माईक तैयार करके फिर डेट फिक्स करो।

ब. इस्टर्न में पूजा बहुत होती है तो पुजारी बहुत हैं। तो पुजारियों को पूज्य बनाना–इस सेवा का चांस इस्टर्न ज़ोन को बहुत है। इस्टर्न ज़ोन को पूज्य बनाने का विशेष वरदान मिला हुआ है।

4. आगरा, यू.पी. वाले क्या करें ?

आगरा आगरा वाले हरेक समझे कि मेरी ज़िम्मेदारी है–लोगों को आकर्षित कर बाप का बनाना। तो आगरा वाले यह नवीनता दिखाओ जो सबकी नज़र जाये। हीरे तैयार करो। ताज महल में झूठे हीरे हैं ना। आप सच्चे हीरे तैयार करो।

कानपुर लौकिक कहावत है कि यू.पी. वाले ''पहले

आप, पहले आप'' का मंत्र ज्यादा पढ़ते हैं। पर आप ''पहले बाप'' का मंत्र याद रखो। यू.पी. वाले सदा भाग्यवान भव: इसमें नम्बर लेंगे।

बनारस – सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रख हीरो पार्टधारी बन हीरो पार्ट बजायेंगे। भटकने वाले भक्तों को बाप का परिचय देकर मधुबन तक पहुँचाओ। यू.पी. वाले सभी भक्ति मार्ग के तीर्थों को आबू तीर्थ में समा दो।

5. महाराष्ट्र वाले क्या करें ?
महाराष्ट्र 5 लाख बनायेंगे। बाम्बे वा महाराष्ट्र एक वारिस क्वालिटी का ग्रुप तैयार करो। बम्बई वाले राजधानी के राजा-रानी और प्रजा तैयार करें। देहली और बाम्बे वाले जब कहेंगे राजधानी तैयार हो गई है तब तो काम होगा ना ? डेट भी फिक्स

करेंगे ना ?

6. कर्नाटक वाले क्या करें ?

कर्नाटक वाले कितनी माला बनायेंगे ? 2 लाख, अच्छा है।

धर्म के निमित्त, धर्म आत्मायें जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं, उन्हें बच्चों के रूप में ग्रुप बना कर लेकर आयें। धर्मनेता बन कर नहीं आवें, बच्चे बन कर आयें।

7. भोपाल वाले क्या करें ?

भोपाल की कितनी संख्या है ? (5 हज़ार) .....।

पाँच हज़ार के आगे एक बिन्दी लगायेंगे। अच्छी प्रजा लायेंगे ना। अगर दो-चार माईक (Mikes) तैयार कर लो तो बिन्दी लगना कोई मुश्किल नहीं होगी और चांस है। तो भोपाल वाले माईक तैयार

करके लायेंगे ? कि हुए ही पड़े हैं ? ला सकते हो, मार्जिन अच्छी है। वहाँ छोटे-छोटे माईक बहुत हैं। एडमिनिस्ट्रेशन के लोग बहुत हैं। तो छोटे-छोटे माईक के ग्रुप भी आवाज़ फैला सकते हैं। वहाँ भी ऑफीसर क्वालिटी अच्छी है। भोपाल वाले नगाड़ा बजायेंगे, जोर-शोर से नगाड़ा बजायेंगे चारों ओर। बाप आ गया, वर्सा लो – ये नगाड़ा बजायेंगे।

8. आन्ध्र प्रदेश वाले क्या करें ?

आन्ध्र प्रदेश वाले ऐसा कोई नया प्लैन बनाओ, जैसे साइन्स वाले नई-नई इन्वेन्शन निकालते रहते हैं ना, तो थोड़े समय में प्राप्ति ज्यादा हो तो आन्ध्र प्रदेश ऐसे ही इन्वेन्शन करो जो थोड़े समय में आत्मायें अनुभूति की प्राप्तियाँ ज्यादा अनुभव करें–उसका साधन क्या है जो समय कम लगे

और प्राप्ति ज्यादा हो ? इसका साधन है आन्ध्र प्रदेश के हर ब्राह्मण आत्मा को लाईट हाऊस, माईट हाऊस बनना पड़े।

9. देहली वाले क्या करें ?

देहली वाले ऐसा पॉवरफुल वायुमण्डल बनाओ जो प्रकृति भी दासी बन जाये, हलचल करने की बजाए दासी बन कर सेवा करे। देहली वालों को डेट फिक्स करनी पड़ेगी। देहली की न्यूज़ इन्टरनेशलन न्यूज़ होती है। इसलिये देहली वालों को एक माईक नहीं, माईक्स का ग्रुप लाना है। झण्डा लहराना है।

छोटे माईक नहीं लाना, बड़े-बड़े माईक संगठन रूप में लाना है।

10. इन्दौर वाले क्या करें ?
इन्दौर में नामी-ग्रामी अच्छे हैं, जिसको सेठ लोग कहते हैं ना, तो सेठ लोग बहुत हैं। सेठों का ग्रुप लाना। बापदादा ने इन्दौर में भेजा ही है सेठों की सेवा के लिये। लेकिन अभी तक कोई सेठ नहीं आया है। इन्दौर को सेठों का झुण्ड लाना है।

11. तामिलनाडु, केरला वाले क्या करें ?
अभी थोड़ी संख्या और बढ़ाओ। अच्छे से अच्छे वारिसों को स्टेज पर लाओ। अगर गुप्त हैं तो स्टेज पर लाओ। अगर नहीं हैं तो निकालो। दूसरे सीज़न में सबसे ज्यादा संख्या होनी चाहिए। तामिल में स्थूल नॉलेजफुल क्वालिटी बहुत अच्छी है। तो सभी ऐसे जो नॉलेज की अथॉरिटी कहलाई जाती

है ऐसे अथॉरिटी वालों का ग्रुप तैयार करके लाना। तामिल तमोगुण को खत्म कर दो। सब सतोप्रधान हो जायें।

12. राजस्थान वाले क्या करें ?

राजस्थान में सेवाकेन्द्रों की संख्या और बढ़ाओ। थोड़ी मेहनत लगती है ना ? लेकिन अभी समय सहयोगी बन रहा है इसलिये अभी मेहनत कम लगेगी। राजस्थान में एक भी एरिया खुश्क नहीं रह जाये। राजस्थान को वैसे कहते हैं बड़ा खुश्क है लेकिन ब्राह्मण जीवन में सबसे हरा-भरा राजस्थान है। जो कहते हैं ना राजस्थान में रेत है तो रेत के बजाय सोने के महल हो जायेंगे। तो रेती को सोना बनाओ। तो राजस्थान वाले सोने के महल तैयार करेंगे, सोने जैसी आत्मायें तैयार करेंगे। राजस्थान

अर्थात् राजस्थान को परिस्तान बनाने वाले। चारों ओर परिस्तान की खुशबू दिखाई दे। हर एक स्टेट के सहज माइक निकाल सकते हैं। तो राजस्थान वाले राजाओं को फिर से राज्य-भाग्य के अधिकारी बनाओ। राजस्थान ऐसा ग्रुप तैयार करो जो सारे राजायें खुशी-खुशी से राज्य अधिकार की खुशी में मधुबन की स्टेज पर डांस करे।

अमेरिका वाले क्या करें ?

अमेरिका क्या जलवा दिखाएगी ? कोई नई बात करेंगे ना। वर्ल्ड टी.वी. में आयेगा। प्रत्यक्षता का झण्डा पहले देखें अमेरिका में लहराते हैं या अफ्रीका में या कहाँ लहराते हैं या भारत में लहराते हैं ? तो पहले कहाँ लहराएगा ? अमेरिका में ? यू.एन. (U.N.) के बिल्डिग में शिवबाबा का झण्डा

लहराना। तो यू.एन. की बिल्डिग में झण्डा लहरायेंगे तो सब क्या बोलेंगे ? वन्स मोर वन्स मोर (Once more, Once more) वह दिन भी आना ही है।

यूरोप वाले क्या करें ?

यूरोप कहाँ झण्डा लहराएगा ? लन्दन के महल में। जैसे वहाँ की परेड देखने आते हैं ना तो ऐसे इस झण्डे को देखने आवें। होना है ना। और ही आपको अर्जियाँ करके जायेंगे–आओ। थोड़ा-सा हलचल होने दो, उन्हों की हलचल होगी, अपना झण्डा लहरायेंगे।

अफ्रीका वाले क्या करें ?

अफ्रीका वाले जो नामीग्रामी स्थान हो, वहाँ झण्डा

लहराना। अभी उस मिलेट्री की परेड निकालते हैं और फिर ब्रह्माकुमारियों की यात्रा निकले। इस वर्ष विशेष दृढ़ता की विशेषता को हर संकल्प में प्रैक्टिकल में लायेंगे।

ऑस्ट्रेलिया वाले क्या करें ?

ऑस्ट्रेलिया में बापदादा की बहुत-बहुत-बहुत श्रेष्ठ आशाओं के दीपक जग रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया ऐसी कमाल करेंगे जो कोई ने नहीं की। क्यों कमाल करेंगे ? कारण ? क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में सब प्रकार की बुद्धि वाले हैं। इन्वेन्टर भी हैं, कार्य को, प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने वाली बुद्धि भी है, इसलिये आदि में भी ऑस्ट्रेलिया ने बहुत कमाल दिखाई। अभी भी थोड़ा प्लैन बना रहे हैं। और आगे चलकर प्रैक्टिकल में आना ही है। तो ऑस्ट्रेलिया की तरफ बापदादा की विशेष श्रेष्ठ सेवा के आशाओं की

नज़र है। समझा ?
रशिया वाले क्या करें ?
रशिया वालों की यूनिटी बहुत अच्छी है। अच्छी रिजल्ट है ना। देखो, अभी तो स्थान भी मिल रहे हैं। अभी और गवर्मेन्ट को अपना बनाते जाओ। सारे विश्व में सच्चा सहारा कौन – यह झण्डा लहरायेंगे। सहारेदाता बाप को प्रत्यक्ष करके सबको किनारे लगायेंगे। तो झण्डे लहराना–सहारे-दाता कौन ? तो सबको मालूम पड़ेगा–कौन है ?

मॉरीशियस वाले क्या करें ?
मॉरीशियस की चमक इतनी होगी जो जल्दी भारत पहुँचेंगे। मॉरीशियस की चमक भारत के कुम्भकरण को जगा देगी ना। इसके लिये सत्यता की शक्ति का झण्डा लहराओ।

मिडिल इस्ट वाले क्या करें ?
असम्भव को सम्भव करेंगे ? अभी पहले असम्भव से सम्भव ये करो कि खुले रूप से सेन्टर खुल जाये। है तो सम्भव ना। लेकिन असम्भव को सम्भव करने वाले युक्तियुक्त, युक्ति के बिना मुक्ति नहीं होनी है। इसलिये युक्तियुक्त ऐसा प्रयत्न करो जो ये आवाज़ निकले कि अल्लाह आ गया। युक्ति को नहीं छोड़ना। जा कर प्रभातफेरी निकाल लो–ऐसे नहीं करना। गुप्त है ना अभी तो। पाण्डवों के लिये प्रसिद्ध है कि पराये राज्य में गुप्त में कार्य किया। तो अभी गुप्त का पार्ट धीरे-धीरे खुलता जा रहा है।

जर्मनी वाले क्या करें ?

जर्मनी वालों को अभी कोई नई कमाल करके दिखानी है। ऐसी कमाल करके दिखाओ जर्मनी, जो आत्मायें किसी ने तैयार नहीं की हों ऐसी आत्माएँ जर्मनी तैयार करेगा जो सब ताली बजाएँ–वाह जर्मनी, वाह! अभी ऐसा अच्छा सेवाकेन्द्र खोलो जो आवे उनको उस स्थान से नवीनता का अनुभव हो। ऐसा वायब्रेशन हो जो सभी को आकर्षित करे।

केनेडा वाले क्या करें ?

केनेडा का स्थान तो बहुत बड़ा है, उसमें नवीनता क्या बनाई है ? केनेडा वालों को जैसे स्थान है उसी अनुसार कोई-न-कोई नवीनता करनी है, म्यूजियम कॉमन नहीं, जो अभी तक हो चुका है वह कॉमन हो गया, अभी और इन्वेन्शन कर ऐसा बनाओ जो जैसे लौकिक हिस्ट्री में वण्डर्स गाये जाते हैं ना ऐसे केनेडा का स्थान वण्डर्स में गाया जाए।

स्व-उन्नति के लिये

अनमोल

महावाक्य

1995-96